काव्य समृध्दि

(हिन्दी कविता संकलन)

पाठ्य-पुस्तक

तृतीय सेमिस्टर - बी. सी.ए/बी.एस.सी (फाड)

III SEMESTAR - B.C.A/B.SC (FAD)

(Language under AECC for the year 2022-23 onwards)

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय (बी.सि.यु)

BENGALURU CITY UNIVERSITY (B.C.U)

संपादक

डॉ. शेखर

डॉ. शैलजा

डॉ. शर्मिला बिश्वास

डॉ. सुलोचना हेच.आय

KAVYA SAMRIDHI

Edited by:
Dr. Shekhar
Dr. Shylaja
Dr. Sharmila Biswas
Dr. Sulochana H.I

@ बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय
प्रथम संस्करण – 2022

Pages: 43

प्रधान संपादक
डॉ. शेखर

मूल्य:

भूमिका

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय में 2021-22 शैक्षिक वर्ष से एन.ई.पी-2020 नियम (पद्धति) के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए नया पाठ्यक्रम जारी किया जा रहा है।

इस पाठ्यक्रम की संरचना ऐसी की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात् हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विश्लेषण और सराहना कैसे किया जाए और दिये गये पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए, ताकि विद्यार्थी भाषा और साहित्य के उद्देश्य से भली-भाँति परिचित हो सके। जैसे विज्ञान और आदि विषयों के अध्ययन के साथ यह भी अधिक उपयोगी है। एन.ई.पी सेमिस्टर पद्धति के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया है।

इस पृष्ठभूमि में हिन्दी अध्ययन-मण्डल ने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर जी के मार्गदर्शन में पाठ्य-पुस्तक का निर्माण किया है।

विश्वास है कि यह काव्य संकलन छात्र समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय की यह शुभेच्छा है कि साहित्य और समाजशास्त्रीय विषयों के लिए भी अधिक उपयोगी और प्रासंगिक लगे। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देनेवाले सभी के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

डॉ. लिंगराज गांधी
कुलपति
बेंगलूर नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु-560001

प्रधान संपादक की कलम से.....

बेंगलूरू नगर विश्वविध्यालय शैक्षिक क्षेत्र में नये-नये विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के अनुसार प्रस्तुति करने का प्रयत्न हो रहा है। साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थिति के अनुसार रखने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।

एन.ई.पी सेमिस्टर पध्दति के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा रहा है। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले सम्पादकों के प्रति मैं आभारी हूँ।

इस नयी पाठ्य पुस्तक के निर्माण में कुलपति महोदय डॉ. लिंगराज गांधी जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, तदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस पाठ्यक्रम को नयी शिक्षा नीति के ध्येयोद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। काव्य के विविध आयामों को इस पाठ्य पुस्तक में शामिल किये गए हैं। आशा है कि सभी विद्यार्थीगण इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

डॉ. शेखर
अध्यक्ष(बी.ओ.एस)
बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु-560001

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	कविता	कवि	पृ. सं
1.	सूरदास के पद	- सूरदास	05-07
2.	मीराबाई के पद	- मीराबाई	08-10
3.	सिपाही	- माखनलाल चतुर्वेदी	11-16
4.	मधुशाला	- हरिवशराय बच्चन	17-20
5.	कर्मवीर	- अ. उपाध्याय 'हरिऔध	21-25
6.	कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती	- सोहनलाल द्विवेदी	26-27
7.	आया समय उठो तुम नारी	- शैलेन्द्र कुमार	28-31
8.	आओ बात करें बस हिंदुस्तान की	- ज्ञानचंद मर्मज्ञ	32-35
9.	मध्य कालीन कविताओं का सारांश		36-41
10.	कठिन शब्दार्थ		42-43

1. सूरदास (१४७८-१५८०)

भक्त सूरदास जी प्रसिद्ध संत, कवि और संगीतकार थे। कहा जाता है कि वह जन्मांध थे। सूरदास हिन्दी साहित्य में भक्ति काल के सगुण भक्ति शाखा के कृष्ण-भक्ति उपशाखा के महान कवि हैं। वह श्री वल्लभाचार्य जी के आठ शिष्यों में से थे। उनके इन सभी शिष्यों को अष्टछाप के नाम से जाना जाता है। संत सूरदास जी की काव्य रचनायें सूरसागर, सूरसारावली, नल-दमयन्ती, ब्याहलो और साहित्य-लहरी हैं। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित पुस्तकों की विवरण तालिका में सूरदास के १६ ग्रन्थों का उल्लेख है। इनमें सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, नल-दमयन्ती, ब्याहलो के अतिरिक्त दशम स्कंध टीका, नागलीला, भागवत्, गोवर्धन लीला, सूरपचीसी, सूरसागर सार, प्राणप्यारी, आदि ग्रन्थ सम्मिलित हैं। उन की रचना हिंदी बोली की उपबोली ब्रज भाषा में है।

~@~

“सूरदास के पद”

- सूरदास

चरन कमल बंदौ हरिराई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, अंधे को सब कछु दरसाई।
बहरो सुने मूक पुनि बोले,रंक चले सिर छत्र धराई ।
‘सूरदास’ स्वामी करुणामय, बारबार बंदौ तिहिं पाई ॥1॥

अबिगत गति कछु कहति न आवै।
ज्यों गूंगो मीठे फल की रस अन्तर्गत ही भावै॥
परम स्वादु सबहीं जु निरन्तर अमित तोष उपजावै।
मन बानी कों अगम अगोचर सो जाने जो पावै॥
रूप रैख गुन जाति जुगति बिनु निरालंब मन चकृत धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातों सूर सगुन लीला पद गावै।2।

मोहन काहे न उगिलो माटी।
बार-बार अनरूचि उपजावति, महरिं हाथ लिए साँटी।।
महतारी सौं मानत नाहीं, कपट-चतुराई ठाटी।
बदन उघारि दिखायौ अपनौ, नाटक की परिपाटी।
बड़ी बार भई लोचन उघरे, भरम-जवनिका फाटी।
सूर निरखि नंदरानि भ्रमित भई, कहति न मीठी-खाटी ॥3॥

अधर रस मुरली लूटन लागी।
जा रस कौं षट रितु तप कीन्हो सो रस पियत सभागी।
कहाँ रही, कहँ तें इह आई, कोनै याहि बुलाई?
चलित भई कहति ब्रजबासिनि, वह तो भली न आई।।
सावधान क्यों होति नहीं तुम, उपजी बुरी भुलाई।
सूरदास हम पर ताकौ, कीन्ही साँटि बजाई ॥4॥

यह गोकुल गोपाल उपासी।
जो गाहक निर्गुन के ऊधौ,
ते सब बसत ईस-पुर कासी।।
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि,
तदपि रहति चरननि रस रासी।
अपनी सीतलता नहिं छाँड़त,
जद्यपि बिधु भयो-राहु-गरासी।
किहिंअपराध जोग लिखि पठवत,
प्रेम भगति तैं 'करत उदासी।
सूरदास ऐसी को बिरहिनि,
माँगि मुक्ति छाँड़े गुन रासी ॥5॥

~@~

2. मीराबाई

मीराबाई एक मध्यकालीन हिन्दू आध्यात्मिक कवयित्री और कृष्ण भक्त थी। भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित उनके भजन आज भी उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं और श्रद्धा के साथ गाये जाते हैं। मीरा का जन्म राजस्थान के एक राजघराने में हुआ था। मीराबाई ने सामाजिक और पारिवारिक दस्तूरों का बहादुरी से मुकाबला किया और कृष्ण को अपना पति मानकर उनकी भक्ति में लीन हो गयीं। उनके ससुराल पक्ष ने उनकी कृष्ण भक्ति को राजघराने के अनुकूल नहीं माना और समय-समय पर उनपर अत्याचार किये। मीराबाई का जीवन आधुनिक युग में कई फिल्मों, साहित्य और कॉमिक्स का विषय रहा है। मीराबाई के जीवन से संबंधित कोई भी विश्वसनीय ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं हैं। विद्वानों ने साहित्य और दूसरे स्रोतों से मीराबाई के जीवन के बारे में प्रकाश डालने की कोशिश की है। ऐसा माना जाता है कि बहुत दिनों तक वृन्दावन में रहने के बाद मीरा द्वारिका चली गई जहाँ सन् 1560 में वे भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति में समा गईं।

मीराबाई की कविता की विशेषता : भावमयी होने के कारण, उनके काव्यत्व की प्रचुर मात्रा हमें वस्तुतः अपूर्ण रसोद्भावना वर्णनों के अंतर्गत मिल सकती है।

~@~

“मीराबाई के पद”

- मीराबाई

बसो मोरे नैनन में नंदलाल।।
मोहनी मूरति साँवरी सूरति, नैणां बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त बछल गोपाल ॥1॥

पग घुंघरू बाँध मीरा नाची, रे।
मैं तो मेरे नारायण की, आपहि हो गइ दासी, रे।
लोग कहैं मीरा भई बावरी, न्यात कहें कुछ नासी, रे।
विष का प्याला राणाजी भेज्या, पीवत मीरा हांसी रे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अविनासी रे ॥2॥

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई॥
जाके सिर है मोरपखा मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई॥
छांड़ि दई कुलकी कानि कहा करिहै कोई॥
संतन ढिग बैठि बैठि लोकलाज खोई॥
चुनरीके किये टूक ओढ़ लीन्हीं लोई।
मोती मूंगे उतार बनमाला पोई॥

अंसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम-बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणंद फल होई॥
दूध की मथनियां बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई॥
भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही॥3॥

~@~

3. माखनलाल चतुर्वेदी
(4 अप्रैल1889 - 30 जनवरी 1968)

माखनलाल चतुर्वेदी (४ अप्रैल १८८९-३० जनवरी १९६८) का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई नामक स्थान पर हुआ था। वे कवि, लेखक और पत्रकार थे। उनकी भाषा सरल और ओजपूर्ण है । प्रभा और कर्मवीर पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया । १९२१-२२ के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। आपकी कविताओं में देशप्रेम के साथ साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है। १९४३ में हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा 'देव पुरस्कार' माखनलालजी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था। १९५५ में साहित्य अकादमी पुरस्कार 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया। १९६३ में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। उनकी काव्य कृतियाँ: हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही, धूम्र वलय आदि और गद्यात्मक कृतियाँ: कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पांव, अमीर इरादे:गरीब इरादे आदि हैं।

भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ कर बाहर आए। इसके लिये उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। वे सच्चे देशप्रेमी थे और १९२१-२२ के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है।

~@~

“सिपाही”

- माखनलाल चतुर्वेदी

गिनो न मेरी श्वास,
छुए क्यों मुझे विपुल सम्मान?
भूलो ऐ इतिहास,
ख़रीदे हुए विश्व-ईमान!!
अरि-मुंडों का दान,
रक्त-तर्पण भर का अभिमान,
लड़ने तक महमान,
एक पूँजी है तीर-कमान!
मुझे भूलने में सुख पाती,
जग की काली स्याही,
दासो दूर, कठिन सौदा है
मैं हूँ एक सिपाही!

क्या वीणा की स्वर-लहरी का
सुनें मधुरतर नाद?
छिः! मेरी प्रत्यंचा भूले
अपना यह उन्माद!
झंकारों का कभी सुना है
भीषण वाद विवाद?
क्या तुमको है कुरु-क्षेत्र
हलदी-घाटी की याद!

सिर पर प्रलय, नेत्र में मस्ती,
मुट्ठी में मनचाही,
लक्ष्य मात्र मेरा प्रियतम है,
मैं हूँ एक सिपाही।

खींचो राम-राज्य लाने को,
भू-मंडल पर त्रेता!
बनने दो आकाश छेदकर
उसको राष्ट्र-विजेता,
जाने दो, मेरी किस
बूते कठिन परीक्षा लेता,
कोटि-कोटि कंठों 'जय-जय' है
आप कौन हैं, नेता?
सेना छिन्न, प्रयत्न खिन्न कर,
लाये न्योत तबाही,
कैसे पूजूँ गुमराही को
मैं हूँ एक सिपाही?

बोल अरे सेनापति मेरे!
मन की घुंडी खोल,
जल, थल, नभ, हिल-डुल जाने दे,
तू किंचित् मत डोल!
दे हथियार या कि मत दे तू

पर तू कर हुंकार,
ज्ञातों को मत, अज्ञातों को,
तू इस बार पुकार!
धीरज रोग, प्रतीक्षा चिंता,
सपने बने तबाही,
कह 'तैयार'! द्वार खुलने दे,
मैं हूँ एक सिपाही !

बदले रोज बदलियाँ, मत कर
चिंता इसकी लेश;
गर्जन-तर्जन रे देख
अपना हरीयाल देश!
खिलने से पहले टूटेंगी,
तोड़, बता मत भेद ;
वनमाली, अनुशासन की
कैंची से अंतर छेद !
श्रम-सीकर प्रकार पर जीकर,
बना लक्ष आराध्य,
मैं हूँएक सिपाही, बलि है
मेरा अन्तिम साध्य !
कोई नभ से आग उगलकर
किये शांति का दान,
कोई माँग रहा हथकड़ियाँ

छेड़ क्रांति की तान!
कोई अधिकारों के चरणों
चढ़ा रहा ईमान,
''हरी घास शूली के पहले
की''—तेरा गुण गान!
आशा मिटी, कामना टूटी,
बिगुल बज पड़ी यार!
मैं हूँ एक सिपाही। पथ दे,
खुला देख वह द्वार !

~@~

4. हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय

हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद में एक कायस्थ परिवार मे हुआ था। हरिवंश राय बच्चन के पूर्वज मूलरूप से अमोढ़ा (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। यह एक कायस्थ परिवार था। कुछ कायस्थ परिवार इस स्थान को छोड़ कर इलाहाबाद जा बसे थे। इनके पिता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा माता का नाम सरस्वती देवी था। इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा' या 'संतान' होता है। बाद में ये इसी नाम से प्रसिद्ध हुए।

उन्होंने कायस्थ पाठशाला में पहले उर्दू और फिर हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम°ए° और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्लू°बी° यीट्स की कविताओं पर शोधकर पी.एच.डी.(Ph.D) पूरी की थी। १९२६ में १९ वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ जो उस समय १४ वर्ष की थीं। सन १९३६ में टीबी के कारण श्यामा की मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद १९४१ में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थीं। इसी समय उन्होंने 'नीड़ का निर्माण फिर' जैसे कविताओं की रचना की। उनके पुत्र अमिताभ बच्चन एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं।

“मधुशाला”

- हरिवशराय बच्चन

क्षीण, क्षुद्र, क्षणभंगुर,
दुर्बल मानव मिट्टी का प्याला
भरी हुई है जिसके अंदर
कटु- मधु जीवन की हाला

मृत्यु बनी है निदर्य साकी
अपने शत- शत कर फ़ैला
काल प्रबल है पीनेवाला,
संसृति है यह मधुशाला।

कितनी आई और गई पी
इस मदिरालय में हाला
टूट चुकी इस गर में कितने
मादक प्यालों की माला,

कितने साकी अपना-अपना
काम ख़तम कर दूर गए,
कितने पिने वाले आए,
किन्तु वही है मधुशाला।

मैं मदिरालय के अंदर हूँ,
मेरे हाथों में प्याला
प्याले में मदिरालय
बिंबित करनेवाली है हाला

इस उधेड-न में ही मेरा
सारा जीवन बीत गयाबु -
मैं मधुशाला के अंदर या
मेरे अंदर मधुशाला !

किसे नहीं पीने से नाता,
किसे नहीं भाता प्याला
इस जगती के मदिरालय में
तरह- तरह की है हाला

अपनी- अपनी इच्छा के
अनुसार सभी पी मदमा-ते
एक सभी का मादक साकी,
एक सभी की मधुशाला।

वह हाला, कर शांत सके
जो मेरे अंतर की ज्वाला
जिसमें मैं बिबित- प्रतिबिंबित
प्रतिपल, वह मेरा प्याला

मधुशाला वह नहीं जहाँ
पर मदिरा बेची जाती है
भेंट जहाँ मस्ती की मिलती
मेरी तो वह मधुशाला।

जितनी दिल की गहराई हो
उतना गहरा है प्याला
जितनी मन की मादकता हो
उतनी मादक है हाला

जितनी उर की भावुकता हो
उतना सुन्दर साकी है
जितना ही जो रसिक, उसे है
उतनी रसमय मधुशाला

कुचल हसरतें कितनी अपनी,
हाय, बना पाया हाला
कितने अरमानों को करके
ख़ाक बना पाया प्याला!

पी पीनेवाले चल देंगे,
हाय, न कोई जानेगा
कितने मन के महल ढहे
तब खड़ी हुई यह मधुशाला।

5. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

कवि परिचय

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (15 अप्रैल, 1865-16 मार्च, 1947) का जन्म उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ जिले के निजामाबाद नामक स्थान में हुआ। उनके पिता पंडित भोलानाथ उपाध्याय ने सिख धर्म अपना कर अपना नाम भोला सिंह रख लिया था। हरिऔध जी ने निजामाबाद से मिडिल परीक्षा पास की, किंतु स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण उन्हें कॉलेज छोड़ना पड़ा।

उन्होंने घर पर ही रह कर संस्कृत, उर्दू, फ़ारसी और अंग्रेजी आदि का अध्ययन किया और १८८४ में निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापक हो गए। सन् १८८९ में हरिऔध जी को सरकारी नौकरी मिल गई। सरकारी नौकरी से सन १९३२ में अवकाश ग्रहण करने के बाद हरिऔध जी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अवैतनिक शिक्षक के रूप में १९३२ से १९४१ तक अध्यापन कार्य किया।

उनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं: - प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास, काव्योपवन, रसकलश, बोलचाल, चोखे चौपदे चुभते चौपदे, पारिजात, कल्पलता, मर्मस्पर्श, पवित्र पर्व, दिव्य दोहावली, हरिऔध सतसई ।

~@~

“कर्मवीर”

- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।।1।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही।
मानते जी की हैं सुनते हैं सदा सब की कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही।
भूल कर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।।2।।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।
आजकल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किए।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।।3।।

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर।
वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठों पहर।
गर्जते जल-राशि की उठती हुई ऊँची लहर।
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लवर।
ये कँपा सकतीं कभी जिसके कलेजे को नहीं।
भूलकर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।।4।।

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।
जो कि हँस हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
''है कठिन कुछ भी नहीं'' जिनके है जी में यह ठना।
कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौन सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।।5।।

ठीकरी को वे बना देते हैं सोने की डली।
रेग को करके दिखा देते हैं वे सुन्दर खली।
वे बबूलों में लगा देते हैं चंपे की कली।
काक को भी वे सिखा देते हैं कोकिल-काकली।
ऊसरों में हैं खिला देते अनूठे वे कमल।
वे लगा देते हैं उकठे काठ में भी फूल फल।।6।।

काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूल कर मुँह मोड़ते।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहिं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन।।7।।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।
गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महा-मंगल रचा देते हैं वे।
भेद नभ तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार तार सारी क्रिया।।8।।

कार्य्य-थल को वे कभी नहिं पूछते 'वह है कहाँ'।
कर दिखाते हैं असंभव को वही संभव यहाँ।
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ।
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ।
डाल देते हैं विरोधी सैकड़ों ही अड़चनें।
वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टलें।।9।।

जो रुकावट डाल कर होवे कोई पर्वत खड़ा।
तो उसे देते हैं अपनी युक्तियों से वे उड़ा।
बीच में पड़कर जलधि जो काम देवे गड़बड़ा।
तो बना देंगे उसे वे क्षुद्र पानी का घड़ा।
बन ख़गालेंगे करेंगे व्योम में बाजीगरी।
कुछ अजब धुन काम के करने की उनमें है भरी।।10।।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले फले।
बुध्दि, विद्या, धान, विभव के हैं जहाँ डेरे डले।
वे बनाने से उन्हीं के बन गये इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की औ जाति की होगी भलाई भी तभी।।11।।

~@~

6. सोहनलाल द्विवेदी

कवि परिचय:

भाषा के सशक्त हस्ताक्षर कवि सोहनलाल द्विवेदी का जन्म 22 फरवरी1906 को उत्तर प्रदेश के फ़तेहपुर में हुआ था। उनकी रचनाओं में महात्मा गांधी के प्रतिबिम्ब नज़र आते हैं। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत कविताएं लिखने के कारण इन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि दी गयी। 1 मार्च 1988 को उनका निधन हो गया।

उनकी रचनाएँ ओजपूर्ण एवं राष्ट्रीयता की परिचायक हैं। गांधीवाद को अभिव्यक्ति देने के लिए इन्होंने युगावतार, गांधी,खादी गीत, गाँवों में किसान, दांडीयात्रा, राष्ट्रीय निशान आदि शीर्ष से लोकप्रिय रचनाओं का सृजन किया है। इसके अतिरिक्त आपने भारत देश ध्वज, राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र नेताओं के विषय की उत्तम कोटि की कविताएँ लिखी है। सन् 1941 में देश प्रेम से लबरेज भैरवी, उनकी प्रथम प्रकाशित रचना थी। उनकी महत्वपूर्ण शैली में पूजागीत, युगाधार, विषपान, वासन्ती, चित्रा जैसी अनेक काव्यकृतियाँ सामने आई थी। उनकी बहुमुखी प्रतिभा तो उसी समय सामने आई थी जब 1937 में लखनऊ से उन्होंने दैनिक पत्र 'अधिकार' का सम्पादन शूरू किया था। चार वर्ष बाद उन्होंने अवैतनिक सम्पादक के रूप में "बालसखा" का सम्पादन भी किया था। देश में बाल साहित्य के वे महान आचार्य थे।

“कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती”

- सोहनलाल द्विवेदी

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

7. शैलेन्द्र कुमार सिंह चौहान

कवि परिचय:

जन्म: २१-१२-१९५४ (खरगौन) पैतृक स्थान: मैनपुरी (उ.प्र.) संप्रति स्थाई निवास: जयपुर (राजस्थान) शिक्षा: प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा (विदिशा जिले के ग्रामीण भाग में) बी.ई. (इलेक्ट्रिकल)

विदिशा से लेखन: विद्यार्थी जीवन से प्रारंभ कविताएँ एवं कहानियाँ, बाद को आलोचना में हाथ आजमाए, वैज्ञानिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनैतिक लेखन भी।

प्रकाशन: सभी स्तरीय साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन।

कविता संग्रह: 'नौ रुपये बीस पैसे के लिए' १९८३ में प्रकाशित 'श्वेतपत्र' दो दशकों के अंतराल के बाद 2002 में 'और कितने प्रकाश वर्ष' 2003 में 'ईश्वर की चौखट पर' 2004 में।

कहानी संग्रह: 'नहीं यह कोई कहानी नहीं' १९९६ में प्रकाशित कथा, संस्मरणात्मक उपन्यास एवं एक आलोचना पुस्तक तैयार।

संपादन: 'धरती' अनियत कालिक साहित्यिक पत्रिका, जिसके कुछ अंक, यथा गज़ल अंक, समकालीन कविता अंक, त्रिलोचन अंक और शील अंक चर्चित रहे। हाल ही में कवि शलभ श्रीराम सिंह पर एक महत्वपूर्ण अंक संपादित है।

अन्य: श्री रामवृक्ष बेनीपुरी पर सामान्य जन संदेश का बहुचर्चित विशेषांक संपादित, सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी कुंदनलाल गुप्त, शिव वर्मा एवं अमर शहीद महावीर सिंह की संक्षिप्त परिचयात्मक जीवनियाँ। एक निबन्ध संग्रह संस्कृति और समाज, विकल्प की ओर से प्रकाशित. अभिव्यक्ति, प्रेरणा और सामान्य जन संदेश पत्रिकाओं में संपादन सहयोग।

'सदी के आखरी दौर में' कविता संग्रह के बारह कवियों में से एक सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में लगातार सक्रियता पुरस्कारों, सम्मानों एवं जोड़-जुगाड़ से नितांत परहेज़।

संप्रति : एक सार्वजनिक उपक्रम में मुख्य प्रबंधक

शब्दार्थ: आहट-पदचाप, स्वर्णिम-सुनहला आगत-आया हुआ, प्राप्त, परिमाण-प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, सर्जन-रचना, सृष्टि,

~@~

“आया समय उठो तुम नारी”

- शैलेन्द्र कुमार सिंह चौहान

आया समय
उठो तुम नारी
युग निर्माण तुम्हें करना है
आजादी की खुदी नींव में
तुम्हें प्रगति पत्थर भरना है

अपने को
कमजोर न समझो
जननी हो सम्पूर्ण जगत की
गौरव हो
अपनी संस्कृति की
आहट हो स्वर्णिम आगत की
तुम्हे नया इतिहास देश का
अपने कर्मो से रचना है

दुर्गा हो तुम
लक्ष्मी हो तुम
सरस्वती हो सीता हो तुम
सत्य मार्ग
दिखलाने वाली

रामायण हो गीता हो तुम
रूढ़ि विवशताओं के बन्धन
तोड़ तुम्हें आगे बढ़ना है

साहस, त्याग
दया ममता की
तुम प्रतीक हो अवतारी हो
वक्त पड़े तो
लक्ष्मीबाई
वक्त पड़े तो झलकारी हो
आँधी हो तूफान घिरा हो
पथ पर कभी नहीं रूकना है

शिक्षा हो या
अर्थ जगत हो
या सेवाये हों
सरकारी
पुरूषों के
समान तुम भी हो
हर पद की सच्ची अधिकारी
तुम्हें नये प्रतिमान सृजन के
अपने हाथों से गढ़ना है

~@~

8. ज्ञानचंद मर्मज्ञ

कवि परिचय:

26 अगस्त 1959 को बनारस की रसमयी धरती के पास स्थित एक छोटे से कस्बे सैद्पुर में जन्मे श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ समकालीन कविता के एक अमूल्य हस्ताक्षर के रूप में जाने जाते हैं!

जन्म से भारतीय, शिक्षा से अभियंता, रोजगार से उद्यमी और स्वभाव से कवि श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ अपेक्षाकृत कम हिन्दी भाषी क्षेत्र बंगलुरु में राष्ट्र-भाषा हिंदी के प्रचार प्रसार और विकास के साथ साथ स्थानीय भाषा के साथ समन्वय के लिए सतत प्रयत्नशील हैं !

लगभग तीन दशकों से पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ा रहे ज्ञानचंद मर्मज्ञ जी की प्रथम काव्य-कृति "मिटटी की पलकें " का विमोचन तमिलनाडू के राज्य पाल महामहिम श्री सुरजीत सिंह बरनाला के कर कमलो द्वारा फरवरी -२००७ में हुआ जिसके उपरांत देश के लगभग 100 से भी अधिक संस्थाओं ने उन्हें अनेक सम्मानों से सम्मानित किया!

आप एक संवेदनशील कवि हैं आपकी कविताओं का प्रसारण "सलाम नमस्ते" रेडियो, न्यूयार्क, FM रेडियो,चेन्नई , आकाशवाणी वाराणसी, कोटा, पटियाला और बंगलुरु आदि केन्द्रों से अनेक बार होता रहा है! E-TV एवं अशियानेट सुवर्णा चैनलों पर साक्षात्कार और दूरदर्शन बैंगलोर केंद्र पर आयोजित साहित्यिक चर्चाओं में आपकी सहभागिता रही है!

हिंदी के विकास एवं प्रचार प्रसार हेतु आयोजित अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सहभागिता !

कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध समाज में जागरूकता पैदा करने हेतु देश के विभिन्न मंचों से काव्य पाठ!

बंगुलुरु की अग्रणी साहित्यिक संस्था "अखिल भारतीय साहित्य साधक मंच" के संस्थापक अध्यक्ष व इसके द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र के संपादक हैं !

राजभवन चेन्नई व देश के विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों एवं मुशायरों में सहभागिता!

लायंस क्लब सारक्की, बंगलोर के पूर्व अध्यक्ष! सामाजिक सेवा एवं मानव-उत्थान के अनेक कार्यक्रमों में हिस्सेदारी!

~@~

“आओ... बात करें बस हिंदुस्तान की”

- ज्ञानचंद मर्मज्ञ

ना हिन्दू, ना सिख, ना मुसलमान की,
आओ बात करें बस हिन्दुस्तान की।
अपनी मिट्टी से अपनी पहचान की,
आओ बात करें बस हिंदुस्तान की।

देख मुखौटोंवाले चेहरे,
मानवता गड़ गयी शर्म से।
धर्म किसी का कभी भी नही,
बड़ा हुआ है राष्ट्र-धर्म से।
मातृभूमि की पूजा है भगवान की,
आओ बात करें बस हिन्दुस्तान की।

वो जो प्यार के फूल मसल कर,
नफ़रत के कांटे बोते हैं।
इक दिन ऐसा भी आता है,
बैठ अकेले वे रोते हैं।
चलो बचा लें कुछ खुशबू इन्सान की,
आओ बात करें बस हिन्दुस्तान की।

गंगा की लहरें गाती हैं,
भाई-चारे के गीतों को।
दूर कहीं से कोई पुकारे,
सद्भावों के मनमीतों को ।
रंग लें आओ किरणें नए विहान की,
आओ बात करें बस हिन्दुस्तान की ।

सूनी आँखें, लाल है मंज़र,
मन मैला हाथों में खंज़र।
द्वेष-राग फल फूल रहे हैं,
विश्वासों के खेत हैं बंजर।
कितनी कम है कीमत दुर्लभ जान की।
आओ बात करें बस हिन्दुस्तान की।

काली रातों को समझाना,
शांति-प्रेम के दीप जलाना।
ताक़त एक, एकता ऐसी,
नामुमकिन है हमें हिलाना।
इतनी भी औक़ात नहीं तूफान की,
आओ बात करें बस हिंदुस्तान की।

~@~

पद का सारांश

1. सूरदास के पद

1. मैं भगवान के कमलवत् चरणों की वन्दना करता हूँ जिनकी कृपा से लँगड़ा पर्वत लाँघ जाता है, अन्धे को सब कुछ दिखाई पड़ने लगता है, बहरा सुनने लगता है, गूँगा बोलने लगता है तथा अत्यन्त निर्धन भी छत्रधर (सम्राट्) बन जाता है। सूरदास कहते हैं कि ऐसे कृपालु स्वामी के उन चरणों की मैं बार-बार वन्दना करता।

2. (भगवान के) अव्यक्त (निर्गुणस्वरूप) की कुछ रीति कही नहीं जा सकती । जैसे गूंगे को मीठे फल का स्वाद मन-ही-मन अच्छा लगता है, वैसे ही निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति का आनन्द भी अत्यन्त उच्च कोटि का है तथा निरन्तर असीम सन्तोष प्रदान करने वाला है। (निर्गुणब्रह्म) मन वाणी के द्वारा अग्राह्य है तथा इन्द्रियातीत है, जो उसे प्राप्त कर लेता है वहीं उसे जान पाता है (उससे उत्पन्न आनन्द तथा ज्ञान की अनुभूति मनुष्य अभिव्यक्त नहीं कर सकता) रूप, आकार, गुण, जाति तथा तर्क से रहित है। इस प्रकार निरवलम्ब होकर कहाँ दौड़े अतः (निर्गुणब्रह्म) को विचार की दृष्टि से सब प्रकार से पहुँच के बाहर जानकर सूर अपने पदों में ब्रह्म के सगुण रूप का गायन कर रहे हैं।

3. माँ यशोदा कृष्ण को मिट्टी खाने से रोकती हैं। हे मोहन, तुम मिट्टी क्यों नहीं उगलते? माँ हाथ में छड़ी लेकर मिट्टी खाने में अरुचि पैदा करती हैं किन्तु वे माँ का कहना मानते ही नहीं और उन्होंने अपनी कपटपूर्ण चतुरता को प्रदर्शित किया। अभिनय करते हुए उन्होंने अपना मुँह खोलकर दिखाया। इस आश्चर्य को देखकर माँ यशोदा के नेत्र बहुत देर बाद खुले और भ्रम की यवनिका हट गयी। सूरदास कहते हैं कि कृष्ण के मुख को देखकर नंदरानी भ्रमित हो गयी और उनके मुँह से किसी प्रकार का शब्द नहीं निकला।

4. मुरली कृष्ण के ओंठों का रस लूटने लगी। जिस रस के लिए हम ब्रजबालाओं ने छः ऋतुओं में तप किया, उसी रस को भाग्यशाली (वंशी) पाती है। यह कहाँ थी कहाँ से आ गयी, इसे किसने बुलाया? ऐसा कहती हुई ब्रजबालाएँ चकित हो गई और कहने लगी, 'इस मुरली का आना अच्छा नहीं लगा। तुम लोग सावधान क्यों नहीं हो जाती हो क्योंकि यह एक बुरी बला पैदा हो गयी है। सूरदास कहते हैं कि उसे सौत के रूप में घोषित कर दिया है।

5. उद्धव, यह गोकुल गोपाल का भक्त है। जो निर्गुण के ग्राहक हैं, वे शंकर की नगरी काशी में बसते हैं। यद्यपि कृष्ण ने हमें अनाथ करके छोड़ दिया तो भी चरणों के रस में अनुरक्त रहती हैं। चंद्रमा राहु से ग्रसित होने पर भी अपनी शीतलता को नहीं छोड़ता। किस अपराध के कारण योग लिखकर भेजते हैं और प्रेम-भक्ति से उदासीन करते हैं। सूरदास कहते हैं (गोपियाँ कहती हैं) कि ऐसी कौन विरहिणी है। जो मुक्ति माँगकर गुण राशि (श्रीकृष्ण) को त्याग दे।

कठिन शब्दार्थ

पद १.

राई= राजा; पंगु = लंगड़ा; लघै =लांघना, पार करना; मूक =गूंगा। रंक =निर्धन, गरीब। छत्र धराई = राज-छत्र धारण करना। पाई =चरण।

पद २.

अबिगत=निराकार ब्रह्म; गति=दशा;भावै=भाना; परम=बहुत, अधिक; तोष=संतोष; उपजावै=उत्पन्न करता है। अगोचर=जो इन्द्रियों से न जाना जा सके। रूप=आकार; रेख=आकृति; जुगति=युक्ति; निरालंब=बिना किसी सहारे

के; धावै=दौड़े; बिधि=प्रकार; अगम=पहुंच से बाहर; तातैं=इसलिए; सगुन=सगुण ब्रह्म

पद ३.

उगिलौ = उगलना; माटी = मिट्टी; अनरुचि = घृणा; उपजावति = उत्पन्न करना; बदन = मुख; लोचन = नयन, नेत्र; भरम = भ्रम; मीठी-खाटी = भला-बुरा

पद ४.

अधर = ओंठ; षट रितु = छः ऋतुएँ; सभागी = साथी, सहभागी; उपजी = उत्पत्ति; सांटि = छोटी पतली लकड़ी

पद ५.

उपासी=उपासक; कासी=काशी नगरी; तजि=त्यागना; रसरासी=आनंदित; छाँड़त=छोड़ना, त्यागना; ससि=चंद्र; उदासी=विरक्त। बिरहिन; विरहिणी; मुक्ति=मोक्ष; गुनरासी=गुणों से परिपूर्ण;

~@~

2. मीराबाई के पद

1. हे कृष्ण! तुम मेरी आँखों में बसो तुम्हारी मूर्ति मन को मोह लेनेवाली है, तुम्हारी साँवली सूरत अत्यंत शोभायुक्त है और तुम्हारी आँखे विशाल हैं। तुम्हारे होंठों पर अमृत के रस के समान जीवनदायिनी मुरली और हृदय पर वैजयन्तीमाल शोभित हैं। छोटी-छोटी घंटियाँ कमर में अत्यंत शोभायमान है। पाँवो में पायल की मधुर आवाज कर्णामृत है। मीरा कहती हैं कि हे प्रभु, तुम सदैव संतों को तुम सदैव संतों को सुख देनेवाले हो। इसलिए हे कृष्ण! तुम भक्त-वत्सल कहलाते हो।

2. मीरा कहती है कि मैं पैरों में घुंघरू बाँधकर नाचने लगी हूँ। मेरे इस प्रेमपूर्ण नृत्य को देखकर लोग कहते है कि मीरा पागल हो गई है, सास कहती है कि मैंने कुल की मर्यादा का नाश कर दिया है। मैं तो कृष्ण की दासी बन गयी हूँ। अपने नारायण की हो गयी हूँ। मुझे मारने के लिए राणा ने विष का प्याला भेजा था, जिसे मैं हँसते-हँसते पी गयी। मीरा कहती हैं कि, हे मेरे गिरधर नागर स्वामी ! मैं तुम्हारी शरण में आ गयी हूँ, इसलिए मेरी रक्षा अब तुम्हारे ही हाथ है।

विशेष:- इस पद में मीरा ने अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों का संकेत दिया है।

3. मेरा तो गिरधर गोपाल के अलावा और कोई दूसरा नहीं है, अर्थात् एक मात्र वही मेरा प्राणधार है। हे स्वामी! जिसके सिर पर मोर मुकुट है, वही मेरे पति हैं। उस कृष्ण के लिए मैंने कुल की मर्यादा छोड़ दी है। मैंने साधुओं के पास बैठ बैठकर लोक की लाज को खो दिया है। आँसू रूप जल सींच-सींचकर प्रेम रूपी बेला को बो ली है। अब वह बेला बड़ी होकर प्रेम रूपी फल देन लगी है। उस भक्ति को देखकर राजी हुई तथा संसार को देखकर मैं रोई। मीरा कहती है कि अब तो मेरी लगन गिरधारी कृष्ण से लग गई है, यह छूट नहीं सकती। इसलिए हे कृष्ण, मेरा उद्धार करो।

शब्दार्थ :-

नैनन-आँखों में; मोहनी-मोह लेने वाली; बावरी - पागल, पीवत - पीना गिरधरनागरि – कृष्ण, साँवरि– साँवली; बिसाल-विशाल; अधर-होंठ; सुधारस-अमृत; उर- हृदय; बैजन्तीमाल-वैजयंती माला, जिसे कृष्ण पहना करता था;नुपुर-पायल, भक्तबछल-भक्तों के प्रति प्रेम दिखानेवाला; छाँड़ि-छोड़ना; कानि-मर्यादा; ढिग-साथ; अँसुवन जल - आँसू, आनँद-आनंद; तारो-पार करो ।

विशेषता:- कृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन भावात्मक और चित्रात्मक है।

~@~

कठिन शब्दार्थ

1. सिपाही

विश्व-इमान-मान, सम्मान; आरी-मुंडो-शत्रुओं का सर; तीर-कमान, बाण रखने का तैला; नाद-ध्वनी; भीषण-भयंकर; लक्ष-धेय, उद्देश्य; कोटि-करोड़; कंठ-गला, धीरज-धैर्य;

2. मधुशाला

क्षीण-कमजोर, दुर्बल; क्षुद्र-नीच, अधम; क्षण भंगुर-क्षणिक, अस्थिर; हाला-विष; उधेड़ बुन -निरंतर विचार, ऊहापोह; मादक- नशीला; साकी-शराब पिलानेवाली प्रेमिका।

3. कर्मवीर

विघ्न-बाधा; यत्न-प्रयत्न, कोशिश; व्योम-आकाश; केवर-ज्वाला, कपट, आँच; कलेजा-हृदय, दिल; ठीकानी-तुच्छ, निकासी चीज; डली-क हुई सुपारी, छोटा टुकड़ा छोटा; भुद्र-छोटो; विश्व–ऐश्वर्य, धन, संपंनी;

4. कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।

नौका-नाव, नन्ही-छोटा, सिंधु-सागर, गोताखोर-डुबकियाँ लगानेवाला, हैरानी-आश्चर्य, शीश-सिर, तरल–शीतल, तरंग-लहरे, मृदुल-कोमल, नभ-आसमान, आकाश, उमंग-उत्साह।

5. आया समय उठो तुम नारी

जननी-माता, माँ; आगत-प्राप्त, आया हुआ; ममता-वात्सल्य; प्रतीक-चिन्ह, निशान; सृजन-सृष्टि, रचना;

6. आओ बात करें बस हिंदुस्तान की

मुखौटा–नवाली, चेहरा; मसल-कहावत, मिसाल; विहान-प्रभात, दिन निकालना; मनमीत–मन का मित्र, मखर-फूलो का गुच्छा; खंजर-तलवार, कटार; नामुमकिन-असंभव।

~@~